मॉ – एक एहसास

जिसके माथे पर शिकन की एक भी लकीर नहीं दिखती है
जो अपनी ऑखों में दूसरों के सपने संजोऐ रखती है
जिसके लबों पर हमेशा दुआऐं बसेरा करती है
जो दुखों का अंबार लिऐ भी चेहरे पर मुस्कान बिखेरे रहती है
हो किसी भी रूप में पर, मॉ ऐसी ही होती है।

जो अपने अरमानों को दफन कर औरों के लिऐ जीती है
जो दूसरों की खुशियों में ही अपनी खुशी ढूँढ लेती है
जो अपना सब कुछ वार कर भी तनिक चाह नहीं रखती है
जो दूसरों का पेट भर के खुद भूखी सो जाती है
हो किसी भी रंग की पर, मॉ ऐसी ही होती है।

जिसके हाथों से स्वाद की गंगा बहती है
जिसकी छाती से अमृत धारा निकलती है
जिसके गर्भ में सुकूनों–शांति रहती है
जिसकी गोद में सर रखते ही सभी चिंताओं से मुक्ति मिलती है
हो किसी भी वेष में पर, मॉ ऐसी ही होती है।

जो हमारे गुस्से को भी हॅस कर सह लेती है
जिसे खुद के दर्द में भी, हमारी चिंता रहती है
जो हर मुसीबत में हमारी ढाल बन जाती है
जिसके आर्शीवाद से हर जंग जीत ली जाती है
हो किसी की भी मगर, मॉ ऐसी ही होती है।

जिसकी शख्सियत किसी भी, परिचय की मोहताज़ नहीं
जिसका किसी शब्दों में भी, हो सकता वर्णन नहीं
जिसके दूध का कर्ज हम, कभी चुका सकते नहीं
जिसकी सीख हमें कभी, राह से भटका सकती नहीं
मॉ कोई प्राणी नहीं, मॉ बहुत ही खास है, मॉ तो एक एहसास है।

पीयूष जैन